इंकलाब का गीत/गोरख पाण्डे

हमारी ख्वाहिशों का नाम इंकलाब है!
हमारी ख्वाहिशों का सर्वनाम इंकलाब है!
हमारी कोशिशों का एक नाम इंकलाब है!
हमारा आज एकमात्र काम इंकलाब है!
खतम हो लूट किस तरह जवाब इंकलाब है!
खतम हो भूख किस तरह जवाब इंकलाब है!
खतम हो किस तरह सितम जवाब इंकलाब है!
हमारे हर सवाल का जवाब इंकलाब है!
सभी पुरानी ताकतों का नाश इंकलाब है!
सभी विनाशकारियों का नाश इंकलाब है!
हर एक नवीन सृष्टि का विकास इंकलाब है!
विनाश इंकलाब है, विकास इंकलाब है!
सुनो कि हम दबे हुओं की आह इंकलाब है!
खुलो की मुक्ति की खुली निगाह इंकलाब है!
उठो कि हर गिरे हुओं की राह इंकलाब है!
चलो, बढे चलो युग प्रवाह इंकलाब है!
हमारी ख्वाहिशों का नाम इंकलाब है!
हमारी खवाहिशों का सर्वनाम इंकलाब है!
हमारी कोशिशों का नाम इंकलाब है!
हमारा आज एकमात्र काम इंकलाब है!

ऐलान/गोरख पाण्डे

फावड़ा उठाते हैं हम तो
मिट्टी सोना बन जाती है
हम छेनी और हथौड़े से
कुछ ऐसा जादू करते हैं
पानी बिजली हो जाता है
बिजली से हवा-रोशनी
और दूरी पर काबू करते हैं
हमने औजार उठाए तो इन्सान उठा
झुक गये पहाड़ हमारे कदमों के आगे
हमने आजादी की बुनियाद रखी
हम चाहें तो बंदूक भी उठा सकते हैं
बंदूक कि जो है एक और औजार
मगर जिससे तुमने आजादी छीनी है सबकी
हम नालिश नहीं
फ़ैसला करते हैं

छोटू को कब मिलेगी अपनी पहचान

'छोटू' नाम सुनते ही हमारा ध्यान उस शख्स पर जाता है, जिसको अपना परिचय देने की आवश्यकता नहीं होती। छोटू का नामकरण उसके घर वालों ने न कर बल्कि हम जैसे लोगों ने किया है। जी हां हम उस छोटू की बात कर रहे है जो ढाबों, दुकानों व होटलों में मजदूरी करके अपना व अपने परिवार का जीवन यापन करता है। छोटू आज का नहीं है बल्कि जमाने से है।

इस छोटू के लिए सरकार कई योजनाओं पर कार्य कर रही है। बाल दिवस पर सरकार बच्चों के लिए स्कूलों में सरकारी कार्यक्रम आयोजित करवा कर वाह-वाही लूट रही है। बच्चों को गिफ्ट बांटे जाते हैं व उनके सांस्कृतिक कार्यक्रम करवा कर उनका हौसला अफजाई किया जाता है। परंतु सरकार का ध्यान कभी उस छोटू की तरफ नहीं जाता जो अपने परिवार की आर्थिक तंगी के चलते छोटू बनने पर मजबूर होता है।

बाल दिवस सरकार कई सालों से बनी रही है। कभी भी सरकार ने बाल दिवस पर ऐसा कोई अभियान नहीं चलाया जो छोटू को उसके नाम से छुटकारा दिलवा सके। कई बाल- श्रम पर कार्य करने वाली सामाजिक संस्थाएं महज खानापूर्ति करके अपनी जिम्मेदारी पूरी कर लेती हैं।

फैक्ट्री के बाहर 'बाल श्रम अभिशाप' का स्लोगन लगाने से लोगों का काम चल जाता है। परंतु हकीकत कुछ और ही बयान करती हैं । हमें सुबह से शाम सरेआम सड़कों पर कूड़ा बीनने वाले, भीख मांगने वाले, तमाशा दिखाने वाले, ईट भट्ठा पर काम करने वाले, बच्चे दिखते हैं , क्या अधिकारियों की नजर इन बच्चों पर नहीं पड़ती? क्या अधिकारियों का कर्तव्य नहीं बनता कि इन बच्चों को समाज की मुख्यधारा में लाने का

कभी भी सरकार ने बाल दिवस पर ऐसा कोई अभियान नहीं चलाया जो छोटू को उसके नाम से छुटकारा दिलवा सके। कई बाल- श्रम पर कार्य करने वाली सामाजिक संस्थाएं महज खानापूर्ति करके अपनी जिम्मेदारी पूरी कर लेती है। फैक्ट्री के बाहर 'बाल श्रम अभिशाप' का स्लोगन लगाने से लोगों का काम चल जाता है।

प्रयास करें। बाजारों में चाय ,ढाबे वाले , रेहड़ियो पर हजारों बच्चे काम कर रहे हैं इन सबके बावजूद भी सामाजिक संस्थाएं क्या कर रही हैं? सामाजिक संस्थाएं सिर्फ अनेक प्रकार के भाषण देकर अखबारों में सुर्खियां बटोरने का कार्य कर रही है और जमीनी धरातल पर कुछ कार्य नहीं कर रही। लेकिन भूखे मरने की अपेक्षा छोटू भी छोटू बनने से संतुष्ट है। उसको पता है कि यह सरकार की जो नीतिया है उसे छोटू बने रहने पर मजबूर कर रही हैं।

अगर वह छोटू नहीं रहता तो सरकार की गलत नीतियों के कारण सगे मां-बाप को काम नहीं मिलेगा इसलिए परिवार को भूखा रहने पर विवश होना पड़ेगा। यदि वह स्कूल जाएगा तो स्कूलों में अध्यापकों की कमी से उनकी कामचोरी के कारण कभी सफल नहीं हो पाएगा। बाल श्रम पर काम करने वाले एनजीओ उसके साथ एक दो फोटो अखबारों में देकर अपनी पीठ थपथपाएगी व फिर से उसको छोटू बनने पर मजबूर कर देगी क्या छोटू जिंदगी भर अपने इसी नाम से पहचाना जाएगा या माता-पिता द्वारा दिए गए नाम से। सरकार को चाहिए कि छोटू को उसके असली नाम से अवगत करवा कर उसकी अपनी अलग पहचान बचाये। - **विकास शर्मा**

'सुरक्षित' सीट ढूंढते खट्टर की निगाह एनआईटी पर

पेज एक का शेष

प्रसार करके जनता को भ्रमित करने का काम किया हो। आरएसएस की पढाई क्या हो सकती है इसके नमूने अब सार्वजनिक रूप से -रामजादे-हरामजादे, वंदेमातरम, गौ रक्षा के नाम पर गुंडागर्दी, तिरंगा यात्रा, राष्ट्रवाद, गोडसे मन्दिर आदि-आदि सामने आ रहे हैं। इस तरह की पढी हुई पढाई से विकास तो नहीं पर विनाश जरूर होता है, सामाजिक ताना-बाना नष्ट होता है।

राजनीतिक एवं प्रशासनिक स्तर पर पूरी तरह अयोग्य सिद्ध हो चुके खट्टर जी बार-बार भ्रष्टाचार मुक्त हरियाणा का दावा करने से नहीं चूकते। इन खोखले दावों से भ्रष्टाचार दूर होने की बजाय दिन दूना रात चौगुना बढता जा रहा है। कोई विभाग ऐसा नहीं बचा जिसमें बिना रिश्वत के कोई काम हो जाय। शायद ही किसी विभाग में कोई भूला-भटका कर्मचारी/अधिकारी ईमानदार मिल जाय, वरना सभी आकंठ भ्रष्टाचार में डूबे हुए है। कई अधिकारी तो ऐसे डकैत हैं जिनके लिये भ्रष्टाचार शब्द बहुत हल्का पड़ता है। भ्रष्टाचार बढे भी क्यों नहीं जब चुन-चुन कर महाभ्रष्टों को अति महत्वपूर्ण पदों पर बैठाया जाय।

बतौर कमिश्नर किसी जमाने में फ़रीदाबाद नगर निगम को लूट कर ले जाने वाला आईएएस अधिकारी राजेश खुल्लर, खट्टर साहब को इतना भाया कि उसे भारत सरकार की प्रतिनियुक्ति से तुर्त-फुर्त वापस बुला कर अपना पूरा कार्यभार उसे सौंप दिया।

इतना ही नहीं, किसी भी महकमे में थोड़ा-बहुत भ्रष्टाचार पकड़ने का प्रयास करने पर अशोक खेमका व प्रदीप कासनी जैसे अधिकारी को तुरंत चलता कर दिया जाता है। इसी से पूरी सरकारी मशीनरी समझ जाती है कि खट्टर जी ईमानदारों को पसन्द करते हैं या भ्रष्टों को।

प्रशासनिक सूझ-बूझ का आलम तो यह है कि इनके 37 महीने के राज में शायद ही कोई महीना ऐसा निकला हो जिसमें आईएएस, आईपीएस, एचसीएस व एचपीएस स्तर के 10-20 तबादले न हुए हों। इन्हें अब तक यही समझ में नहीं आ पाया कि किस अधिकारी को कहां लगाना है। इन्हीं के शासनकाल में फ़रीदाबाद में 4 उपायुक्त, 9 नगर निगम आयुक्त, 8 'हूडा' प्रशासक रह कर जा चुके हैं। निगम आयुक्त की पोस्ट तो अक्सर खाली ही रहती है, यही हाल निगम के संयुक्त आयुक्तों का भी रहता है। शेष महकमों की स्थिति भी कोई बहुत अच्छी नहीं है।

अपने इन कर्मों के चलते आज हरियाणा में खट्टर की कतई कोई साख बची नज़र नहीं आती, और तो और करनाल शहर में भी जहां से ये विधायक चुने गये हैं, इन्हें कोई वोट देनेवाला नज़र नहीं आ रहा। इसी लिये अब ये साहब आगामी चुनाव जीतने के लिये कोई 'सुरक्षित' सीट की तलाश में हैं। उनकी यह तलाश रोहतक या किसी अन्य जगह की बजाय एनआईटी फ़रीदाबाद में पूरी होती नज़र आ रही है। कारण? कारण कोई खास नहीं। इस क्षेत्र में भी इन्होंने ऐसा कुछ करके नहीं दिखाया जिसके बल पर ये वोट मांग सकें। बल है तो केवल पंजाबी बाहुल क्षेत्र होने भर का। इसी उम्मीद में इनके यहां दौरों की संख्या बढती जा रही है। दशहरे पर रावण दहन करने के बहाने, मुफ्त में जुटी भीड़ को अपना भाषण भी इन्होंने पिलाया था। मौजूदा विधायक सीमा त्रिखा की गिरती साख को देखते हुए उनके धुर विरोधी एवं पूर्व विधायक चन्दर भाटिया को घर से बुला कर खट्टर ने अच्छा-खासा भाव दिया था।

इस सबके बावजूद खट्टर यह भूल रहे हैं कि जिसे अपने घर में ठौर नहीं उसे कहीं और भी नहीं। पंजाबी बाहुल इस क्षेत्र के अपने स्थानीय नेताओं की कोई कमी है जो इनकी बहकाई में आ जायेंगे? आज जनता बहुत समझदार हो चुकी है, वह थोथी घोषनाओं व चुनावी जुमलों के बहकावे में बार-बार आने वाली नहीं।

मोदी की गोदी में जाने को आतुर 'जनसत्ता' सम्पादक मुकेश भारद्वाज की पेड न्यूज

पेज एक का शेष

बाइकसवार दो लड़के मारे गये थे। इसके अलावा भी सड़क निर्माण कार्य में हो रही लापरवाहियों से आये दिन कोई न कोई दुर्घटना इस राजमार्ग पर (शहर के ऐन बीच) हो रही हैं। बार-बार नारियल फ़ोड़ चुके इन मन्त्री जी को इस सड़क पर पड़े आधे-अधूरे काम नज़र क्यों नहीं आते?

उक्त मुद्दों के अलावा मन्त्री जी के मामा श्री को लेकर तो कितने ही प्रश्न पूछे जा सकते हैं। पुलिस विभाग में उनकी दखलंदाज़ी के चलते बढते अपराधों के अलावा हर महकमे में होने वाली लूट पर उनका पूरा संरक्षण है। यमुना नदी से कोई एक बुग्गी रेत भर लाये तो वह चोर और मामा जी के 10 डम्पर रात दिन रेत ढोंये तो वे शाह। परमिट लेकर चलने वाले वाहन तो पुलिस व आरटीए को रिश्वत देकर चल पाते हैं और इनकी बसें रिश्वत तो क्या देंगी, परमीट फ़ीस देने की भी जरूरत नहीं। पुलिस कमिश्नर लाख इन्कार करे लेकिन जनता तो देख रही है मामा श्री के साथ चलते सशस्त्र पुलिस गार्डों को।

साक्षात्कार के नाम पर पेड न्यूज की इस कवायद का सबसे दुखद पहलू है 'जनसत्ता' जैसे कभी बेहद संवेदनशील अखबार को सम्पादक मुकेश भारद्वाज द्वारा पेड न्यूज का मंच बना देना । राजनेता तो जो बिक रहा है, वे खरीदेंगे ही।

पूर्व उपायुक्त प्रवीण की पत्नी ने हवाई अड्डे .....

पेज एक का शेष

उस महिला मैनेजर को। मैनेजर भी तुरंत दुगणे जोर से एक झन्नाटेदार थप्पड़ दे मारा श्रीमती प्रवीण को। मामला पुलिस में गया जहां दोनों में समझौता हो गया। घमंड की बजाय यदि थोड़ी बहुत बुद्धि होती आईएएस की पत्नी में तो बिना थप्पड़म-थप्पड़ा हुए भी तो समझोता कर के अगली उड़ान से निकल सकती थी जो वह समझौते के बाद निकली। प्रवीण कुमार को भाजपा की मदद करने हेतु विशेषतौर पर गुजरात में चुनाव ड्यूटी के लिये बतौर पर्यवेक्षक तैनात किया गया है। चुनाव आयोग के नियमानुसार इस तरह की ड्यूटी पर भेजे जा रहे अधिकारियों की पत्नी या पति को ड्यूटी स्थल पर जाने की सख्त मनाही है, जिसका उल्लंघन किये जाने पर नियम 7 के तहत विभागीय कार्यवाही की जा सकती है। अब देखना है कि पति-पत्नी दोनों वहां ठहर पाते हैं या बैरंग वापस लौटाये जाते हैं।

हीरो को विलेन बनाने की साजिशें हुई नाकाम

डॉ. कफील पर लगे आरोप गलत साबित हुए

गोरखपुर के बीआरडी मेडिकल कॉलेज में बच्चों की जान बचाने वालें डॉ. कफील अहमद खान को बदनाम करने की कोशिश नाकाम हो गई है। गोरखपुर पुलिस ने डॉक्टर कफील, जिन पर करप्शन से लेकर प्राइवेट अस्पताल चलाने तक के आरोप लगाये गए उसे जांच में गलत बता दिया है। बीआरडी मेडिकल में जब मासूमों की जान खतरें में आई तो डॉ कफील ही वो शख्स थे जिन्होंने ऑक्सीजन सिलेंडर के इंतजाम कर कई बच्चों की जान बचाई थी। आखिर में उन्हें ही 9 बच्चों की मौत का आरोपी बना दिया गया था। अब जब मामलें की जांच हुई तो जाँच कर रहे अभिषेक सिंह ने कहा कि, ऐसा कोई सुबूत मिलता नहीं जिससे उनपर लगाये गए इल्जाम को सही ठहरा जा सके इसलिए उनके खिलाफ कोई मामला बनता ही नहीं है। गौरतलब है कि इस साल अगस्त महीने में गोरखपुर के बीआरडी मेडिकल कॉलेज में करीब 48 बच्चों की मौत ऑक्सीजन न मिलने से हो गई थी। जिसे लेकर योगी सरकार की जमकर आलोचना हुई थी।

साप्ताहिक मज़दूर मोर्चा

जी हां, पाठकों की भारी मांग पर मज़दूर मोर्चा अब 15 दिन के बजाय 7 दिन बाद मिलने लगेगा। अर्थात अब आपका यह अखबार पाक्षिक से साप्ताहिक होने जा रहा है। सुधी पाठकों को अब अगले धमाके के लिये लम्बा इन्तज़ार नहीं करना पड़ा करेगा। परिवर्तन की तिथि शीघ्र घोषित की जायेगी।

आशा है सभी पाठक सहयोग बनाये रखेंगे।

सम्पादक

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5
2. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
4. 5 ई-18 नरेन्द्र बुक सेन्टर - 9810229192
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे
6. राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने
7. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास
8. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207
9. सिंगला मेडिकल स्टोर, जवाहर कॉलोनी, डिस्पोजल चौक
10. आरसीएम स्टोर, बाबा बालकनाथ मंदिर वाली गली, जवाहर कालोनी, फ़रीदाबाद